

STRESS

बलाघात

बलाघात से तात्पर्य है भाषा के मौखिक प्रयोग में शब्द के किसी विशेष अंश पर या शब्द समूह में किसी शब्द-विशेष पर बल देना। प्रायः बाल्याल में 'बलाघात' और लक्ष्य का पर्यायवाची शब्दों के रूप में म्रमपूर्ण प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी 'रक्सोट' का प्रयोग वक्ता के अनुतागत सौच के लिए भी किया जाता है।

बलाघात वस्तुतः शब्द अथवा शब्द-समूह के उच्चारण में किसी अंश पर लगाया गया बल है। दूसरे शब्दों में बलाघात एक प्रकार का विशेष बल अथवा प्रमुख आघात है। जिस वक्ता शब्द अथवा शब्द-समूह के किसी अंश पर प्रयुक्त करता है।

बलाघात शिक्षण

अन्य भाषा के शिक्षण में ध्वनियों के उच्चारण के साथ-साथ उस भाषा की प्रकृति के अनुरूप बलाघात-शिक्षण की विशेष महत्त्व रखता है। बलाघात-शिक्षण में कुछ बातों पर ध्यान देना उचित है -

1. दागों को अन्य भाषा में बलाघात के निग्रमां से परिचित कराना आवश्यक है। इससे शब्दों के सही उच्चारण में उसे सहायता मिलती है। अतः प्रारम्भ से ही इसके शिक्षण पर ध्यान देना आवश्यक है।

२. ध्वनि शिक्षण - सम्बन्धी समस्याओं की माँग
 ललाट और लय के शिक्षण में भी एक-एक
 शिक्षण-विन्दु के शिक्षण पर ध्यान केंद्रित करना
 आवश्यक है। शिक्षण-विन्दु विशेष पर पर्याप्त
 अभ्यास कराने के बाद ही अन्य विन्दुओं
 को लिया जा सकता है। इसमें भी समस्याओं
 को अनुस्तरित करना और उन्हें क्रम से
 सीखाना उचित है।

३. मातृभाषा और अन्य भाषा के ललाट - सौचा के
 अन्तर को स्पष्ट करना आवश्यक है। यह
 चिन्ह विशेष क्रम से बल को दौलत करते हैं।

४. ललाट के शिक्षण में अनुकरण - अभ्यास का
 विशेष महत्व है। अध्यापक द्वारा प्रस्तुत किये
 गए नमूने का छात्र अनुकरण करते हैं।
 मातृभाषा के ललाट सौचा के स्वान पर अन्य
 भाषा के ललाट सौचा के प्रयोग की आदत
 उपन्न करना जरूरी है। इसके लिए निरन्तर
 अभ्यास सर्वोत्तम साधन है।

५. ललाट का अभ्यास रूप की सहायता से भी
 कराया जा सकता है। अध्यापक द्वारा प्रस्तुत किये
 गये नमूने का अथवा मातृभाषा के ललाट की
 रूप द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। तत्पश्चात् इसके
 अनुकरण को अभ्यास कराया जाता है। इससे
 विशेष लाभ अध्यापक को मार्गदर्शन देने का
 अधिक अवसर मिलता है।

स्पष्ट है कि अन्य भाषा के
 शिक्षण में ललाट का उपस्थित शिक्षण आवश्यक
 है जिससे छात्र में इसके प्रयोग की सहज
 आदत विकसित हो सके।